शोध-पत्र

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी-चेतना

डॉ. सुनीता खुराना

मैथिलीशरण गुप्त का समय भारतीय इतिहास का वह कालखंड है जब नवजागरण चेतना के परिणामस्वरूप सदियों से पददलित नारी को लेकर भारत का बुद्धिजीवी वर्ग चिन्तित था और उसकी स्थिति में सुधार के प्रयत्न होने लगे थे। नवाजगरण चेतना के परिणामस्वरूप द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य में नारी को प्रमुख स्थान दिया।

हिन्दी कविता में नवजागरण-चेतना की ठोस अभिव्यक्ति द्विवेदीयुगीन कविता में होनी आरंभ होती है और इसका सबसे प्रबल स्वर मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में सुनाई देता है। इस स्वर का प्रथम सशक्त उदाहरण उनका काव्य 'भारत-भारती' है जो नवजागरण की विभिन्न विशेषताओं स्वचेतनता, आत्मावलोकन, यथार्थबोध, अतीत के उज्ज्वल पक्षों के प्रति गौरव-भावना, प्रगतिशील चेतना आदि को अपने भीतर धारण करता है।

'भारत-भारती' के तीन खंडों-अतीत खंड, वर्तमान खंड तथा भविष्यत् खंड के माध्यम से मैथिलीशरण गुप्त ने 'हम कौन थे', 'क्या हो गए हैं' और 'क्या होंगे अभी' इन तीन प्रश्नों का सूक्ष्म विवेचन किया है। मूल चिन्ता यह है कि जिस भारत का अतीत इतना गौरवपूर्ण है, वही आज इतना दुर्दशाग्रस्त क्यों है?

'भारत-भारती' के 'अतीत खंड' में मैथिलीशरण गुप्त ने भारतवर्ष के प्राचीनकाल में ज्ञान और सभ्यता के विकसित रूप, सांस्कृतिक मूल्यों की उत्कृष्टता और विभिन्न स्तरों पर संपन्नता को रेखांकित किया है-

"संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है वह कौन भारत वर्ष है।"[1]

भारत-भारती का दूसरा खंड 'वर्तमान खंड' गहरे आत्मावलोकन और वास्तविकताओं के चित्रण से युक्त है। कवि ने भारत की वर्तमान दुर्दशा के चित्र उपस्थित करते हुए उसके कारणों के रूप में धार्मिक आडंबर एवं पाखंड, पंडितों की अज्ञानता, क्षत्रियों की विषयोन्मुखता, वैश्यों के लालच, बेमेल विवाह, नशेबाजी, अंधविश्वास आदि का उद्घाटन किया है। इसके साथ ही उनकी दृष्टि अंग्रेजों की आर्थिक-शोषण की नीति, देश विरोधी शिक्षा-नीति, किसानों की दुर्दशा आदि पर भी गई है।

तृतीय खंड 'भविष्य खंड' में मैथिलीशरण गुप्त ने देश की जागृति तथा परिवर्तन पर बल दिया है।

द्विवेदी युगीन कवि मैथिलीशरण गुप्त उस नवजागरण-चेतना से अनुप्राणित रचनाकार हैं जिसका एक महत्वपूर्ण लक्ष्य भारतीय नारी की दयनीय दशा में बदलाव लाना भी था। द्विवेदी युग का नेतृत्व करने वाले आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी भी अपने लेखों एवं निबंधों के माध्यम से उन्हें नारी-विषयक सार्थक रचनाओं के निर्माण हेतु प्रेरित कर रहे थे। इन कारणों से मैथिलीशरण गुप्त ने नारी को केन्द्र में रखते हुए साकेत, यशोधरा, हिडिम्बा, विष्णुप्रिया, द्वापर आदि कई काव्य-ग्रंथों की रचना की जिनके माध्यम से उनकी नारी-भावना की विवेचना की जा सकती है। विशेषकर साकेत की 'उर्मिला' तथा यशोधरा की 'यशोधरा' उनके अविस्मरणीय नारी-चरित्र हैं।

भारतीय समाज में यदि हम नारी की स्थिति को देखें तो हम पाते हैं कि भारतीय इतिहास के प्राचीन काल में नारी का समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान था।"भारत के चिंतकों एवं मनीषियों ने योग्य स्त्रियों के लिए उच्चतम सामाजिक स्थिति प्रदान की थी।[2]"

ऋग्वेद में उस समय के समाज में पुरुषों की तुलना में

Peer Reviewed Refereed Journal • ISSN : 2456-0898

स्त्रियों की स्थिति निम्न होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। उत्तरवैदिक काल में नारी की स्थिति में गिरावट आई। उन्हें वेद पढ़ने और वेदमंत्रों के उच्चारण से वंचित कर दिया गया। पर, परिवार में नारी का महत्त्व बना रहा। नारी की स्थिति में स्पष्ट पतन का आरंभ धर्मशास्त्रों के काल में आरंभ हुआ। वह शिक्षा के अवसर से वंचित कर दी गई और उसपर कई प्रकार के बंधन लग गए। विधवा-विवाह का निषेध कर दिया गया। मध्यकाल में पर्दा-प्रथा, सती प्रथा, देवदासी प्रथा आदि कई कुरीतियाँ आ गईं। आधुनिक काल में नवजागरण के प्रभावस्वरूप नारी की स्थिति में सुधार के प्रयत्न प्रारंभ हुए। साहित्यिक धरातल पर यह प्रयत्न सर्वप्रथम मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में दिखायी देता है।

मैथिलीशरण गुप्त ने पुरुष प्रधान समाज द्वारा प्रताड़ित, अपमानित एवं तिरस्कृत नारियों को व्यक्तित्व संपन्न करके पहली बार मुखरित होते हुए दर्शाया है। पुरुष के अन्याय और अत्याचार के प्रति गहरे असंतोष और आक्रोश को अपने नारी चरित्रों द्वारा पहली बार उन्होंने सचेत ढंग से अभिव्यक्ति दी है। सेवा, त्याग, ममत्व, करुणा तथा सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति उनके नारी-चरित्र पुरुष प्रधान समाज द्वारा निर्दिष्ट दोहरी नैतिकता के नियमों का शांत ढंग से कड़ा प्रतिरोध करते हैं। इन नारी चरित्रों के माध्यम से वे यह स्थापित करने में सफल हुए हैं कि पुरुषों की कीर्ति के पीछे नारियों का बलिदान काम करता रहा है। लक्ष्मण की यशगाथा के मूल में उर्मिला की तपस्या का, गौतम बुद्ध की बुद्धत्व प्राप्ति में यशोधरा के त्याग और बलिदान का और महावीर की आध्यात्मिक सिद्धि और दार्शनिक खोज में विष्णुप्रिया के सर्वस्व समर्पण का जो रहस्य इतिहास के पृष्ठों में छिपा हुआ था, उसे उद्घाटित करने का यशस्वी प्रयास मैथिलीशरण गुप्त ने किया।

मैथिलीशरण गुप्त की नारी-भावना पारंपरिक नहीं है। वे नारी को शिक्षित एवं स्वाभिमानी रूप में तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए देखना चाहते थे। किन्तु, साथ ही वे गृहिणी के रूप में उसकी पारिवारिक भूमिका भी मानते थे। कुल मिलाकर उनकी नारी-भावना तत्कालीन युगानुकूल दिखाई देती है।

साकेत की उर्मिला विरह की पीड़ा से दंशित होने के बावजूद देश-प्रेम, वीरता से, स्वाभिमान से युक्त दिखाई देती है। जब शत्रुघ्न अपनी प्रजा को सोने की लंका को लूटने का आदेश देते हैं, उसके माथे पर सिंदूर होता है और हाथ में भाला। वह शत्रुघ्न की आज्ञा का खण्डन करती हुए उद्घोषित करती है-

"गरज उठी वह नहीं, नहीं, पापी का सोना,
यहाँ न लाना, भले सिंधू में वहीं, डुबोना"[3]

उर्मिला एक पापी की संपदा को अपने घर लाने से मना करके वीर सैनिकों के हृदय में अपने देश के प्रति गहन श्रद्धा उवं प्रेम को प्रस्फुटित करती है। उर्मिला सैनिकों को समझाती है कि वे अपने देश के सम्मान का ध्यान रखें। वे कोई भी ऐसा कृत्य न करें जिससे मातृभूमि के सम्मान को क्षति पहुँचे। उनका व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि शत्रु पक्ष भी उससे प्रभावित होकर शिक्षा प्राप्त कर ले-

"विन्ध्य-हिमाचल-भाल, भला, झुक जाय न धीरो,
चन्द्र-सूर्य-कुल-कीर्ति-कला रूक जाय न वीरों!"[4]
"पावें तुमसे आज शत्रु भी ऐसी शिक्षा,
जिसका अर्थ हो दण्ड और अति दया-तितिज्ञा।"[5]

उर्मिला सेवा-भावना से भी युक्त है। वह केवल युद्ध में ही अपनी रक्षा-क्षमता दिखाने का सामर्थ्य नहीं रखती, बल्कि घायल सैनिकों की सेवा के लिए भी स्वयं को उपस्थित रखती है। वह कहती है-

"वीरों, पर, यह योग भला क्यों खोऊँगी मैं,
अपने हाथों घाव तुम्हारे धोऊँगी मैं।
पानी दूँगी तुम्हें, न पल भर सोऊँगी मैं,
गा अपनों की विजय, परों पर रोऊँगी मैं"[6]

अपनी कृति 'यशोधरा' में मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी नारी-भावना की प्रखर अभिव्यक्ति की है। यह स्त्री पर पुरुष द्वारा विश्वास न करने से आहत एक स्त्री की कथा है। यशोधरा बुद्ध की पत्नी है और बुद्ध उसे बिना बताए चुपचाप घर छोड़ कर चले जाते हैं। यशोधरा इससे आहत हैं क्योंकि यह उसके व्यक्तित्व पर एक प्रश्नचिह्न है। वह कहती है कि क्या उसमें इतना अधिक स्वार्थ-भाव है कि उसके पति अपनी इच्छा उसके सामने प्रकट करते तो वह उन्हें राजपाट त्यागकर जाने से रोक लेती। वह कहती है-

"जाओ नाथ! अमृत लाओ तुम, मुझमें मेरा पानी,
चेरी ही मैं बहुत तुम्हारी, मुक्ति तुम्हारी रानी
प्रियतम तपो, सहूँ मैं भरसक, देखूँ बस हे दारी-
कहाँ तुम्हारी गुण-गाथा में मेरी करुण कहानी?
तुम्हे अप्सरा-विघ्न न व्यापे यशोधरा करघार।

आर्य पुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी।"[7]

इस रचना में यशोधरा का जो चरित्र उपस्थित हुआ है वह एक आधुनिक नारी का संतुलित और विवेकशील चरित्र है। उसके मन में अपने पति के प्रति थोड़ा-सा भी क्षोभ नहीं है। वह कठोर होती भी है तो इसलिये कि बुद्ध नारी की महिमा को, अपनी पत्नी के महत्त्व को नहीं समझ पाते। वास्तव में वह स्वयं के प्रति ही कठोर होती है। यशोधरा जीवन में समान अधिकार की आकांक्षा रखने वाली आधुनिक नारी का प्रतीक दिखायी देती है।

'जयभारत' की द्रौपदी भी नारी-चेतना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण चरित्र है। उसके माध्यम से मैथिलीशरण गुप्त नारी के तेजस्वी रूप को अभिव्यक्त करते हैं। जयद्रथ जब पाण्डवों की असहायता का उल्लेख कर द्रौपदी को अपने वश में करना चाहता है तो द्रौपदी उसका तिरस्कार करते हुए कहती है-

"सावधान, मैं सुन न सकूँगी बात और अब आधी,
अपनी चिंता करो, न ही तुम औरों के अपराधी।
नर ही अपराधी होता है, निरपराध है नारी।"8

द्रौपदी नवजागरण की चेतना से युक्त एक मानवतावादी चरित्र है। वह इस रचना में दास-प्रथा का विरोध करते हुए दिखायी देती है। वह जयद्रथ को मृत्युदण्ड दिए जाने की जगह क्षमा करने का अनुरोध करती है-

"भीम एक अवसर दो इसको, तुम निज शेष पचा दो,
एक बार दु:शला बहन के कारण इसे बचा दो।
जाय जयद्रथ, नहीं किसी को दास बनाते हैं हम,
अपनी-सी सबकी स्वतंत्रता सदा मानते हैं हम।"[9]

द्रौपदी आधुनिक युग की लोकतंत्रीय भावना से भी अनुप्राणित है। कीचक जब भरी सभा में द्रौपदी को अपमानित करता है तो वह एक नारी की रक्षा करने में असमर्थ राजा विराट से कहती है-

"तुममें यदि सामर्थ्य नहीं है अब शासन का,
तो क्यों करते नहीं त्याग तुम राजासन का?
करने में यदि दमन दुर्जनों का डरते हो,
तो छूकर क्यों राजदंड दूषित करते हो?"
"तुमसे निज पद का स्वांग भी भली भांति चलता नहीं,
अधिकार-रहित इस छत्र का भार तुम्हें खलता नहीं।"[10]

इस प्रकार मैथिलीशरण गुप्त ने अपने समय के नारी-चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में पौराणिक और ऐतिहासिक नारी-चरित्रों को पुनर्सृजित किया और उनके माध्मय से आधुनिक दृष्टिकोण से नारी-जीवन को उपस्थित किया।

3683, सेक्टर-23।,
गुडगांव, हरियाणा
ईमेल: sunitadelhi3010@gmail.com

सन्दर्भ सूची

1. भारत-भारती, पृ. 23
2. राधा कुमुद मुकर्जी, वुमेन ऑफ इंडिया, पृ. 23
3. साकेत, पृ. 474
4. वही
5. वही पृ. 475
6. वही पृ. 476
7. यशोधरा, पृ. 54
8. जयभारत, पृ. 215
9. जयभारत, पृ. 216
10. जयभारत, पृ. 258